नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव®

बुक्स

हिन्दी साहित्य-XI

(कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 320/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  *****

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य– कक्षा-11

समय : 3.15 घण्टे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	कुल अंक
अपठित (गद्यांश व पद्यांश)	15
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन (अभिव्यक्ति और माध्यम)	22
व्यावहारिक व्याकरण	10
पाठ्यपुस्तक : **अंतरा** (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : **अंतराल** (भाग-1)	13

1. अपठित : (गद्यांश और पद्यांश) **कुल अंक : 15**

(i) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 08

(ii) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 07

2. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : **कुल अंक : 22**

(अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर प्रश्न)

(i) जनसंचार माध्यम और लेखन (दो लघूत्तरात्मक प्रश्न) 04

(ii) निबन्ध (किसी विषय पर विकल्प सहित) 05

(iii) कार्यालयी पत्र/रोजगार सम्बन्धी आवेदन पत्र (विकल्प सहित) 05

(iv) व्यावहारिक लेखन (प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, कार्य-सूची अथवा कार्यवृत्त से सम्बन्धित पर दो प्रश्न) 08

3. व्यावहारिक व्याकरण **कुल अंक : 10**

(दो बहुचयनात्मक, छः रिक्त स्थान पूर्ति, एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) रस प्रकरण 02

(ii) छंद (दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, मन्दाक्रांता, शिखरिणी, वसंततिलका, मालिनी) 04

(iii) अलंकार (अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रांतिमान) 04

4. अंतरा भाग–1 **कुल अंक : 40**

(i) काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 05

(ii) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 05

(iii) किसी एक लेखक/कवि का साहित्यिक परिचय (विकल्प सहित) 02

(iv) गद्य भाग प्रश्नोत्तर (चार बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 15

(v) पद्य भाग प्रश्नोत्तर (चार बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 13

5. अंतराल भाग–1 **13**

पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित

(चार बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक, एक दीर्घउत्तरात्मक, एक निबन्धात्मक प्रश्न) 13

निर्धारित पुस्तकें :

1. **अंतरा–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **अंतराल–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

अन्तरा भाग 1

गद्य-खण्ड

1. ईदगाह (प्रेमचन्द) 1–17
2. दोपहर का भोजन (अमरकान्त) 17–30
3. टार्च बेचनेवाले (हरिशंकर परसाई) 30–42
4. गूँगे (रांगेय राघव) 42–57
5. ज्योतिबा फुले (सुधा अरोड़ा) 57–70
6. खानाबदोश (ओमप्रकाश वाल्मीकि) 70–86
7. उसकी माँ (पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र') 86–98
8. भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है? (भारतेन्दु हरिश्चंद्र) 99–112

काव्य-खण्ड

1. कबीर 113–120
2. सूरदास 120–127
3. देव 128–137
4. सुमित्रानन्दन पन्त 137–153
5. महादेवी वर्मा 153–161
6. नागार्जुन 161–172
7. श्रीकान्त वर्मा 172–180
8. धूमिल 181–188

अन्तराल भाग 1

1. हुसैन की कहानी अपनी जबानी (मकबूल फिदा हुसैन) 189–197
2. आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर) 197–209

अपठित

1. अपठित गद्यांश 210–225

2. अपठित पद्यांश 225–240

रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन

(1) जनसंचार माध्यम और लेखन 241–255

(2) निबन्ध-लेखन 256–294

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
   अथवा
   सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 258
2. कृत्रिम बुद्धिमता (AI) वरदान या अभिशाप
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 258
3. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण 259
4. राजस्थान की सतरंगी संस्कृति 260
5. महिला सशक्तिकरण
   अथवा
   स्त्री सशक्तिकरण 261
6. पेट्रोल एवं डीजल की बढ़ती कीमतें 262
7. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
   अथवा
   कोरोना महामारी–एक अभिशाप
   अथवा
   कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 262
8. मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी उद्योग 263
9. आत्मनिर्भर भारत 264
10. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 264
11. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
    अथवा
    योग की उपादेयता
    अथवा
    योग : स्वास्थ्य की कुंजी

अथवा
योग भगाएँ रोग 265
12. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 266
13. शिक्षा का अधिकार
अथवा
अनिवार्य बाल-शिक्षा का अधिकार 267
14. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा
अथवा
मनरेगा : गाँवों में रोजगार योजना
अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 267
15. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर
अथवा
आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या 268
16. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज
अथवा
मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 269
17. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 270
18. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
शिक्षा का प्रसार : उन्नति का द्वार
अथवा
साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम 270
19. इन्टरनेट-सूचना क्रान्ति
अथवा
इन्टरनेट : सूचना एवं ज्ञान का भण्डार
अथवा
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता 271
20. राजस्थान के पर्यटन स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन की संभावनाएँ
अथवा
राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ 272
21. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले

अथवा
राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 273
22. घटती सामाजिकता : बढ़ते संचार साधन
अथवा
संचार क्रांति और समाज 273
23. समाज-निर्माण में नारी की भूमिका
अथवा
समाज में नारी के बढ़ते कदम
अथवा
समाज में नारी का योगदान 274
24. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व
अथवा
राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व 275
25. वर्तमान शिक्षा और सदाचार
अथवा
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : गुण और दोष 275
26. युवा छात्रों में बढ़ता असंतोष 276
27. नये भारत की आशा-युवावर्ग
अथवा
राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका
अथवा
विद्यार्थियों का राष्ट्र-निर्माण में योगदान
अथवा
युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ 277
28. विद्यार्थी-जीवन एवं अनुशासन
अथवा
अनुशासन का महत्त्व 278
29. बेरोजगारी की समस्या
अथवा
बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय 279
30. महँगाई : समस्या और समाधान
अथवा
बढ़ती महँगाई : घटता जीवन स्तर
अथवा
मूल्यवृद्धि की समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव 279

31. भ्रष्टाचार का महादानव
अथवा
भ्रष्टाचार : कारण व निवारण 280
32. राजस्थान के लोकगीत 281
33. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 282
34. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व
अथवा
जल है तो जीवन है 282
35. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण और युवा 283
36. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा का महत्त्व 284
37. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 285
38. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 285
39. मानवता के लिए चुनौती-कन्या-भ्रूण-हत्या
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगभेद का अपराध 286
40. आधुनिक सूचना - प्रौद्योगिकी
अथवा
सूचना-क्रांति के युग में भारत 287
41. कम्प्यूटर : अभिशाप या वरदान
अथवा
कम्प्यूटर के चमत्कार 287
42. विद्यार्थी और वर्तमान राजनीति 288
43. इक्कीसवीं सदी की कल्पनाएँ व सम्भावनाएँ
अथवा
मेरे सपनों का भारत 289
44. समाचार-पत्र
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 290
45. दहेज-दानव

अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 290
46. बाल-विवाह : सामाजिक अभिशाप 291
47. कम्प्यूटर शिक्षा-आधुनिक समय की आवश्यकता
अथवा
कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 292
48. नदी जल स्वच्छता अभियान 292
49. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 293
50. कटते जंगल : घटता मंगल 294

(3) कार्यालयी पत्र/रोजगार संबंधी आवेदन-पत्र 295-318

(4) व्यावहारिक लेखन 319-351

[1. प्रतिवेदन (रिपोर्ट) 2. प्रेस-विज्ञप्ति 3. परिपत्र 4. कार्यसूची 5. कार्यवृत्त]

व्यावहारिक व्याकरण 352-380

(i) रस प्रकरण 352-362
(ii) छन्द 363-370
(iii) अलंकार 371-380

हिन्दी साहित्य–कक्षा-11

अन्तरा भाग-1

गद्य-खण्ड

1. ईदगाह

(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय

प्रेमचन्दजी का जन्म वाराणसी जनपद (उत्तर प्रदेश) के लमही ग्राम में सन् 1880 ई. में हुआ था। इनका मूल नाम धनपतराय था। चाचा प्यार से नवाब कहते थे। प्रेमचन्द की प्रारम्भिक शिक्षा बनारस में हुई। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ये अध्यापन कार्य करने लगे। फिर स्वाध्याय के रूप में ही बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। ये अध्यापन से डिप्टी इन्स्पेक्टर बने। गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन के दौरान प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और जीविका के लिए लेखन-कार्य को अपनाया। प्रारम्भ में ये नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखने लगे, परन्तु अंग्रेज सरकार द्वारा जब इनकी रचना 'सोजे वतन' जब्त की गई, तब ये हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से लिखने लगे।

प्रेमचन्द ने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक आदि अनेक विधाओं पर लेखनी चलायी। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—मानसरोवर-आठ भाग, गुप्तधन—दो भाग (कहानी संग्रह); उपन्यास—निर्मला, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान; नाटक—कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी; निबन्ध संग्रह—विविध प्रसंग (तीन खण्डों में) तथा कुछ विचार। इन्होंने माधुरी, हंस, मर्यादा तथा जागरण नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसानों, दलितों, नारियों की वेदना और वर्ण-व्यवस्था की कुरीतियों का मार्मिक एवं सर्वश्रेष्ठ चित्रण किया है। इनका निधन सन् 1936 में हुआ।

पाठ का सारांश

ईद की हलचल–प्रस्तुत कहानी के आरम्भ में रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आई ईद से गाँव भर में हुई हलचल का चित्रण किया गया है। बड़े-बूढ़े तो ईद मनाने ईदगाह जाने के लिए तैयारी करते ही हैं साथ ही साथ बच्चे ईद के अवसर पर बहुत खुश होते हैं क्योंकि उन्हें खर्च करने के लिए ईदी मिलती है।

हामिद की स्थिति का चित्रण–गाँव का एक बालक हामिद अनाथ था। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता था। अमीना उसे यह कहकर बहलाती थी कि तेरे अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं और अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं। हामिद यह कल्पना करके प्रसन्न होता था कि अब्बाजान के रुपयों से भरी थैलियाँ और अम्मीजान के तोहफे/उपहार लेकर आने पर वह दिल के अरमान निकाल लेगा।

अमीना का दुःख–हामिद की बूढ़ी गरीब दादी अमीना ईद आने पर अपनी कोठरी में रोती थी। उसके बेटे आबिद को मरे तो बहुत दिन हो गये थे, किन्तु ईद के दिन अपनी अभावग्रस्त स्थिति के कारण उसे आबिद के बारे में सोचकर विशेष दुःख होता था। वह सोचती थी कि आबिद होता तो क्या ईद इसी तरह आती और चली जाती। अमीना के घर ईद मनाने के लिए कुछ नहीं था यहाँ तक कि उसके पास तो अन्न का दाना भी न था।

अमीना की चिन्ता–गाँव के और बच्चे अपने बाप के साथ ईदगाह जा रहे थे किन्तु अमीना हामिद के अकेले जाने के कारण चिन्तित थी। उसे डर था कि बालक मेले की भीड़-भाड़ में कहीं खो न जाए। छोटा-सा हामिद तीन

कोस पैदल जाएगा तो उसके पैरों में छाले पड़ जाएँगे। उसके पास जूते भी नहीं हैं। यह सोचकर अमीना दु:खी और चिन्तित थी।

बाल-सुलभ क्रियाएँ—हामिद और उसके साथी रास्ते में चले जा रहे थे। कभी वे दौड़ते और कभी पीछे रह गये साथियों का इन्तजार करते। सड़क के दोनों ओर पक्की चारदीवारी से घिरे हुए अमीरों के बगीचों में फलदार पेड़ थे, उन्हें देखकर कोई बालक कंकड़ी उठाकर निशाना लगा देता और बच्चे माली को गाली देते देखकर कुछ दूर जाकर खूब हँसते। शहर की अदालत, कॉलेज, क्लब-घर आदि की बड़ी इमारतें देखकर वे उसके सम्बन्ध में कई तरह की कल्पनाएँ करते थे। वे सोचते कि क्लब-घर में मुर्दे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं। क्लब-घर में मेमों के खेलने की सुनी हुई बातों पर उन्हें आश्चर्य होता। हलवाइयों की दुकानों और रात को पहरा देने वाले कान्स्टेबिलों के बारे में सुनी हुई बातों की वे चर्चा करते। कोई कहता कि रात को जिन्नात सारी मिठाई खरीद ले जाते हैं और कान्स्टेबिल चोरों से मिले रहते हैं।

रोजेदारों की सामूहिक क्रियाएँ—बच्चे गाँव वालों के साथ ईदगाह के पास पहुँचे। वे इक्के-ताँगों, मोटरों पर सवार लोगों, उनके भड़कीले वस्त्रों को देखते ही रह जाते। उन्हें अपनी विपन्नता का ध्यान भी न था। लेखक ने पंक्तिबद्ध रोजेदारों की सामूहिक क्रियाओं और ईदगाह की सुन्दर व्यवस्था का चित्रण किया है।

बच्चों का स्पर्द्धा-भाव—बच्चे एक-दूसरे से पीछे नहीं रहना चाहते। वे खिलौने खरीदते हैं और अपने-अपने खिलौनों को श्रेष्ठ मानते हैं। हामिद के साथी मिट्टी के सिपाही, भिश्ती, वकील आदि खरीदते हैं। वे खाने की चीजें खरीदते और खाते हैं, किन्तु हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, वह महँगी चीजें कैसे खरीदे? साथ के बच्चे हामिद की गरीबी का मजाक भी उड़ाते हैं। अन्त में हामिद अपनी दादी का ध्यान रखकर चिमटा खरीदता है और यह सिद्ध करने में सफल हो जाता है कि खिलौनों से चिमटा ही अच्छा है। वह कई खिलौने के बराबर है। सब बच्चे अपने खिलौने हामिद के हाथ में दे देते हैं तब उसके चिमटे को लेकर देखते हैं। बच्चे घर में खिलौने दिखाकर गौरव का अनुभव करते हैं। वे उन्हें अच्छी तरह रखने में अधिक मशगूल होने से सावधानी नहीं रख पाते। फलत: खिलौने गिरकर टूट भी जाते हैं। वे खिलौनों को ठीक करने के लिए अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग भी करते हैं।

अमीना द्वारा दुआएँ देना—हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना को दु:ख हुआ कि उसे सारे मेले में और कोई चीज ही न मिली। हामिद द्वारा सफाई देने पर अमीना का क्रोध स्नेह में बदल गया। हामिद के सद्भाव को देखकर वह गद्गद हो गई। अंतत: वह रोती जाती और हामिद को दुआएँ देती जाती थी। हामिद अपनी दादी के ऐसे व्यवहार का रहस्य नहीं जान सका।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. 'ईदगाह' कहानी के उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे ईद के अवसर पर ग्रामीण परिवेश का उल्लास प्रकट होता है।

उत्तर—कोई भी त्योहार हो, उससे मनुष्य उल्लास का अनुभव करता है। ईद का त्यौहार तो पूरे तीस दिन तक रोजे रखने के बाद मनाया जाता है, इस कारण उससे स्वाभाविक रूप से ही उल्लास का अनुभव होता है। त्योहारों पर बड़े-बूढ़े तो सामान जुटाने, तैयारी करने में व्यस्त हो जाते हैं तथा बच्चे त्योहार का पूरा आनन्द प्राप्त करते हैं। कहानीकार ने ईद के अवसर पर ग्रामीणों में ही नहीं, प्रकृति में भी उल्लास दिखाया है। उस दिन बड़ा ही मनोहर, सुहावना प्रभात था। वृक्षों पर सुहावनी हरियाली थी, खेतों में कुछ रौनक थी, आसमान पर कुछ सुनहरी लालिमा थी। सूर्य भी प्यारा, शीतल लग रहा था मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो। गाँव भर में हलचल थी, ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। किसी के कुरते में बटन नहीं थे तो वह पड़ोस के घर से सुई-धागा लेने जा रहा था। किसी के जूते कड़े हो गये थे तो वह तेल डलवाने तेली के पास भागा जा रहा था। बच्चे भी ईदगाह जाने और वहाँ मेला देखने को लेकर प्रसन्न हो रहे थे। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में ईद के अवसर पर उत्पन्न ग्रामीण परिवेश का उल्लास व्यक्त करने वाले कई प्रसंग वर्णित हैं।

प्रश्न 2. 'उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनन्दभरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।'—इस कथन से लेखक का क्या आशय है?

हिन्दी साहित्य–कक्षा-11
अन्तराल भाग-1

1. हुसैन की कहानी अपनी जबानी
(मकबूल फ़िदा हुसैन)

लेखक-परिचय—आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रमुख स्तम्भ मकबूल फिदा हुसैन का जन्म सन् 1915 में शोलापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। कला के प्रति रुचि रखकर इन्होंने सिनेमा होर्डिंग के पेंटर के रूप में काम शुरू किया और खुद कई फिल्मों के निर्माण से जुड़कर सफल रहे। हमेशा चर्चा और विवादों में बने रहने वाले हुसैन ने ललित कला अकादमी की प्रथम राष्ट्रीय प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उन्हें सन् 1966 में 'पद्मश्री' से और सन् 1973 में 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। सन् 1967 में 'थ्रू द आइज आफ ए पेंटर' नामक वृत्तचित्र बनाया जो कि बर्लिन में पुरस्कृत हुआ। चर्चित चित्रकार हुसैन ने कई शृंखलाओं में चित्र बनाए। हुसैन ने युवा कलाकारों के लिए कला का एक नया और विशाल बाज़ार खड़ा किया। उनका निधन सन् 2011 में हुआ।

पाठ का सार

यह पाठ लेखक की आत्मकथा का एक अंश है। इसमें बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल और रानीपुर बाजार से सम्बन्धित अंश को उपस्थित किया गया है। इसका सार इस प्रकार है—

बड़ौदा बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश—मकबूल के दादा की मृत्यु के बाद उसके पिता ने उसे स्कूल में भेजने का निर्णय लिया और मकबूल के चाचा से कहा कि इसे बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल में छोड़ आओ। तब चाचा ने उसे बड़ौदा के सुलेमानी जमात के बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश दिला दिया। उस स्कूल का संचालन नेशनल कांग्रेस और गांधीजी के अनुयायी जी.एम. हकीम अब्बास तैयबजी करते थे। वहाँ पर छात्रों के मुंडे सिर पर गाँधी टोपी और बदन पर खादी का कुरता-पायजामा पहनना अनिवार्य था।

स्कूल की सुव्यवस्था—उस बोर्डिंग स्कूल में मौलवी अकबर कुरान व उर्दू-साहित्य, केशवलाल गुजराती भाषा, मेजर अब्दुल्ला स्काउट की शिक्षा देते थे। गुलजमा खान बैण्ड मास्टर थे। बावर्ची गुलाम की रोटियाँ और बीबी नरगिस का सालन भी स्मरणीय था।

मित्र-मण्डली—उस स्कूल में लेखक के पाँच दोस्त थे—मोहम्मद इब्राहीम गोहर अली, अरशद, हामिद कंवर हुसैन, अब्बास अहमद और अब्बास अली फिदा। ये सब अपने-अपने गुणों एवं स्वभाव के कारण स्मृति में बने रहे। वहाँ दो वर्ष की मित्रता जीवन भर दिल की निकटता बनी रही।

मदरसे का जलसा—उस मदरसे का सालाना जलसा हुआ जिसमें फोटोग्राफर लुकमानी खास मेहमानों के फोटो खींचता रहा। लेखक ने बड़ी चतुराई से अपना भी फोटो खिंचवाया था। लेखक ने खेलकूद में भी हिस्सा लिया, जब ड्राईंग मास्टर मोहम्मद अतहर ने ब्लैक बोर्ड पर चाक से एक चिड़िया बनाई, उसे लेखक ने स्लेट पर हूबहू बनाकर पूरे दस अंक प्राप्त किये। गांधी जयन्ती पर लेखक ने ब्लैक बोर्ड पर उनका पोर्ट्रेट बनाया तथा 'इलम' (ज्ञान) विषय पर अभिनय के समय भाषण भी दिया।

रानीपुर बाजार में रहना—मकबूल के चाचा मुरादअली की रानीपुर बाजार में जनरल स्टोर की एक दुकान थी। व्यापार के गुण सीखने के लिए मकबूल को अपने पिता के निर्देश पर दुकान में बैठना पड़ता था। मकबूल के पिता स्वयं तो करीम भाई की मालवा टैक्सटाइल में टाइम कीपर थे, परन्तु वे बिजनेस में दिलचस्पी रखते थे। मुरादअली का जनरल स्टोर न चला तो कपड़े की दुकान, वह भी न चली तो रेस्तरां खुलवाया। मकबूल इन दुकानों पर भी चाचा के साथ बैठता

रहा, किन्तु वहाँ भी सारा ध्यान ड्राइंग और पेंटिंग पर रहा। गल्ले का हिसाब-किताब सही रखा, परन्तु स्केच भी खींचता रहा।

ड्राइंग के प्रति अभिरुचि—जनरल स्टोर के सामने से अक्सर घूँघट ताने गुजरने वाली मेहतरानी का स्केच, गेहूँ की बोरी उठाये मजदूर की पेंच वाली पगड़ी का स्केच, पठान की दाढ़ी और माथे पर सिजदा के निशान, बुरका पहने औरत और बकरी का बच्चा—इन सबके स्केच लेखक बनाता था। मेहतरानी कपड़े धोने की साबुन की टिकिया लेने आया करती, तो घूँघट उठा लेती थी और प्रायः मकबूल की नाक पकड़कर हँसती थी। मकबूल ने उसके कई स्केच बनाये, उनमें से एक स्केच उसने छिपा लिया। परन्तु मकबूल ने पेपरमिंट की एक गोली देकर स्केच निकलवाया। एक दिन दुकान के सामने से फिल्मी इश्तहार का ताँगा गुजरा, उस पर मराठा योद्धा के हाथ में तलवार-ढाल का चित्र आयल पेंट से किया गया था। उसे देखकर मकबूल के मन में आयल पेंटिंग की रुचि जागी। तब लेखक ने अपनी इतिहास और भूगोल की किताबें बेचकर ऑयल कलर की ट्यूबें खरीद डालीं तथा चाचा की दुकान पर बैठकर पहली ऑयल पेंटिंग बनाई। चाचा ने बड़े भाई से शिकायत की, परन्तु उन्होंने उस पेंटिंग को देखकर बेटे को गले लगा लिया।

एक अन्य घटना—एक दिन लेखक इन्दौर सर्राफ़ा बाजार के समीप की गली में लैंडस्केप बना रहा था, तो वहाँ उसे बेन्द्रे साहब ऑनस्पाट पेंटिंग करते मिले। लेखक को उनकी तकनीक पसन्द आयी। उस भेंट के बाद लेखक बेन्द्रे के साथ लैण्डस्केप पेंट करने जाने लगा। ये बेन्द्रे साहब बाद में बड़ौदा में फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट के डीन बने। मकबूल एक दिन बेन्द्रे साहब को अपने घर ले आया और अपने पिता से मिलाया। बेन्द्रे से अपने बेटे की प्रशंसा सुनकर लेखक के पिता ने मुम्बई से ऑयल ट्यूब और कैनवस मँगवाने का आर्डर दे दिया।

आर्ट की लाईन में जाने की स्वीकृति—लेखक को आश्चर्य है कि उस समय विपरीत वातावरण में पिता ने पुत्र को आर्ट की लाईन में जाने की स्वीकृति दे दी। उस समय तक आर्ट राजा-महाराजाओं और अमीरों का शौक था, जो अपनी दीवारों पर भड़कीली तस्वीरें लटकाते थे। महलों से उतर कर कल-कारखानों तक आते आर्ट को पचास वर्ष लगे। लेखक को इस बात का आश्चर्य है कि प्रगतिशील सोच वाले उनके पिता ने पचास साल बाद की सोचकर उस पर से सभी पारम्परिक बन्धन हटा दिये और कहा—''बेटा जाओ, और जिन्दगी को रंगों से भर दो।''

कठिन शब्दार्थ—मजहबी = धर्म विशेष से संबंध रखने वाली/वाला। **पाकीज़गी** = शुद्धता, पवित्रता। **अरके तिहाल** = यूनानी दवा का एक नाम। **सालन** = शोरबादार तरकारी/रसेदार सब्ज़ी। **हीले** = बहाने, टालमटोल। **अत्तर (अतर)** = सुगंध, इत्र। **दिलकश** = मन को लुभने वाला, चित्ताकर्षक। **पोर्ट्रेट** = हाथ की बनी तस्वीर। **मेहतरानी** = सफाई का काम करने वाली स्त्री। **स्केच** = चित्र। **सिजदा** = माथा टेकना, खुदा के आगे सिर झुकाना। **टिंटेड पेपर** = चित्रकला में प्रयुक्त होने वाला कागज़। **रोशन खयाली** = आज़ाद खयाली, खुले दिमाग का, अच्छे खयाल रखने वाले। **रिवायती** = पारंपरिक। **अब्बा** = पिता। **बोर्डिंग स्कूल** = जिस स्कूल में विद्यार्थी छात्रावास में रहते हों। **हवाले** = सुपुर्द। **हुकुम** = आदेश। **मज़हबी तालीम** = धार्मिक शिक्षा। **रोज़ा** = व्रत, उपवास। **बरतानिया** = ब्रिटेन। **दारुलतुलबा** = छात्रावास। **मदरसा** = स्कूल, विद्यालय। **अनुयायी** = समर्थक। **मुँड़े सिर** = बाल उतरे हुए सिर। **उस्ताद** = अध्यापक। **जबान** = भाषा। **तमाम** = समस्त। **जलसा** = उत्सव। **इलम** = ज्ञान। **कैद बामशक्कत** = सश्रम कारावास। **हरदिल अजीज** = सबके प्रिय। **शगल** = शौक। **बंदिश** = व्यवधान, रोक। **माहौल** = वातावरण। **इख्तियार** = अपनाना।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने अपने पाँच मित्रों के जो शब्द-चित्र प्रस्तुत किए हैं, उनसे उनके अलग-अलग व्यक्तित्व की झलक मिलती है। फिर भी वे घनिष्ठ मित्र हैं, कैसे?

उत्तर—लेखक के पाँच मित्रों में से मोहम्मद इब्राहीम गोहर अली—गुणों का भंडार; अरशद—हँसता चेहरा, गाने और खाने का शौकीन, कसा पहलवानी शरीर; हामिद कँवर हुसैन—खुश मिजाज, गप्पी, बात मिलाने में उस्ताद, कुश्ती व दंड-बैठक का शौकीन; चौथा अब्बासजी अहमद—गठा जिस्म, हँसने का अंदाज दिलकश, स्वभाव से बिजनेसमैन, पाँचवाँ अब्बास अली फिदा—वक्त का पाबंद, बहुत नरम लहजा, खामोश तबियत आदि गुणों से युक्त थे। लेखक ड्राइंग-पेंटिंग में बेजोड़, खेलकूद में, हाई जंप में स्कूल में प्रथम, गुणग्राही और चतुर था। इन छः किशोरों ने जब दोस्ती की होगी, तो निश्चय ही कुछ गुणों ने एक-दूसरे की ओर आकर्षित किया होगा। इनमें सभी मित्रों में कुछ गुण समान रहे होंगे। यथा—सभी को

हँसना-हँसाना अच्छा लगता है। सभी शरीर को बनाने के प्रति भी सचेत थे। खाने-पीने के मामले में बहुत कुछ समानता थी। लेखक तो बावर्ची गुलाम की रोटियाँ और बीवी नरगिस का सालन गोश्त आज भी नहीं भूल पाया। अरशद खाने-पीने का बहुत शौकीन था। दंड-बैठक लगाने वाले और कुश्ती लड़ने वाले लगभग सभी थे, अत: खान-पान में समानता स्वाभाविक थी। इन्हीं गुणों ने इन सब को मित्रता के सूत्र में बाँध दिया।

प्रश्न 2. 'प्रतिभा छुपाये नहीं छुपती' कथन के आधार पर मकबूल फिदा हुसैन के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त होती है, जो धीरे-धीरे सबके सामने प्रकट हो जाती है। मकबूल हुसैन में भी चित्रकारी की कला जन्मजात थी, जिसमें उनका अधिकतर समय व्यतीत होता था। उनके व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ द्रष्टव्य होती हैं—

(1) चित्रकारी से लगाव व समर्पण—मकबूल हुसैन जनरल स्टोर में बैठे-बैठे अपने सामने से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्केच हूबहू उतार देते थे। उनका ध्यान हिसाब-किताब की बजाय स्केच बनाने में ज्यादा लगता था।

(2) दृढ़ निश्चयी—मकबूल अपनी चित्रकारी को लेकर दृढ़ निश्चयी थे। उन्होंने फिल्मी इश्तिहार को देखकर ऑयल पेंटिंग बनाने का निश्चय किया। इस निश्चय को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी किताबों को बेच कर ऑयल कलर की ट्यूबें खरीद कर ऑयल पेंटिंग बनाई।

(3) जन्मजात कलाकार—मकबूल ने बचपन में स्कूल के मास्टरजी द्वारा बनाई गई चिड़िया को ज्यों का त्यों अपनी स्लेट पर उभार दिया था। उसी दिन मास्टरजी को आभास हो गया था कि ये बड़ा होकर प्रसिद्ध कलाकार बनेगा।

इस तरह आते-जाते लोगों के स्केच तैयार करते-करते मकबूल हुसैन की प्रतिभा पूरे विश्व में फैल गई।

प्रश्न 3. 'लेखक जन्मजात कलाकार है।'—इस आत्मकथा में सबसे पहले यह कहाँ उद्घाटित होता है?

उत्तर—लेखक जन्मजात चित्रकार था। उसकी प्रतिभा का पहला परिचय आत्मकथा में उस समय मिलता है, जब वह बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल में भर्ती हुआ और एक दिन ड्राइंग मास्टर मोहम्मद अतहर ने ब्लैकबोर्ड पर सफेद चॉक से एक बहुत बड़ी चिड़िया बनाकर लड़कों से अपनी स्लेट पर नक़ल करने के लिए कहा। तब लेखक ने अपनी स्लेट पर हूबहू वही चिड़िया ऐसी बना दी मानो वह ब्लैकबोर्ड से उठकर स्लेट पर आ बैठी हो। उसके मूल्यांकन में लेखक को दस में से दस नंबर मिले।

प्रश्न 4. दुकान पर बैठे-बैठे भी मकबूल के भीतर का कलाकार उसके किन कार्यकलापों से अभिव्यक्त होता है?

उत्तर—लेखक जन्मजात कलाकार था। उसके पिता उसे व्यापार में ले जाना चाहते थे। अत: अवकाश के दिन उसे अपने चाचा मुराद अली के जनरल स्टोर या कपड़े की दुकान अथवा रेस्तराँ पर बैठना पड़ता था। लेकिन दुकान पर बैठते समय भी उसका सारा ध्यान ड्राइंग और पेंटिंग पर रहता था। इसी का परिणाम था कि उसने जनरल स्टोर के सामने से गुजरने वाली अथवा यदा-कदा स्टोर पर आने वाली मेहतरानी के अनेक स्केच बनाए। इसके अतिरिक्त गेहूँ की बोरी उठाए मजदूर की पेंचवाली पगड़ी का स्केच, पठान की दाढ़ी और माथे पर सिज़दे के निशान, बुरका पहने औरत और बकरी के बच्चे के स्केच बनाये, जो कि किशोर मकबूल के भीतर बैठे कलाकार को ही अभिव्यक्त कर रहे थे। लेखक के भीतर बैठे कलाकार ने ही उससे किताब बिकवाकर आयल कलर ट्यूबें खरीदवा दी थीं।

प्रश्न 5. प्रचार-प्रसार के पुराने तरीकों और वर्तमान तरीकों में क्या फर्क आया है? पाठ के आधार पर बताएँ।

उत्तर—मकबूल फिदा हुसैन ने अपनी आत्मकथा में उस समय प्रचलित प्रचार-प्रसार का एक उदाहरण दिया है। कोल्हापुर के शांताराम की फिल्म 'सिंहगढ़' का विज्ञापन हो रहा था, जिसमें फिल्मी इश्तिहार का एक ताँगा था। यह ताँगा ब्रास बैंड के साथ शहर के गली-कूचों से गुजर रहा था। फिल्मी इश्तिहार रंगीन पतंग के कागज पर थे, जिसमें हीरो-हीरोइन तस्वीर के साथ छपे पर्चे बाँटे जा रहे थे। वर्तमान समय में प्रचार-प्रसार की विधि बहुत बदल गई है। यदि हम केवल किसी फिल्म के प्रचार की ही बात करें, तो आज का प्रचार बहुत आगे तक चला गया है। फिल्म बनने से पूर्व ही उसकी चर्चा समाचार पत्रों व दूरदर्शन पर होने लगती है। फिर मुहूर्त पर बड़ा-सा कार्यक्रम होता है। फिल्म बनते ही उसका प्रीमियर दिखाया जाता है। टी.वी. व समाचार पत्रों में धुआँधार प्रचार के बाद एक दिन फिल्म रिलीज होती है। सभी अखबारों में सूचना होती है कि किस-किस शहर में किस-किस हॉल में फिल्म लगी हुई है। फिल्म के दृश्यों के रंगीन व मनमोहक पोस्टरों से शहर की दीवारें रंग दी जाती हैं। फिल्म ने कितना कमाया, दर्शकों ने कितना सराहा, यह सब दूरदर्शन पर बताया जाता है। इस प्रकार आज का प्रचार पुराने तरीकों से बहुत आगे निकल गया है। अपनी आत्मकथा में लेखक मकबूल फिदा हुसैन ने आज से लगभग पिचत्तहर वर्ष पुरानी स्थिति का उल्लेख किया है।

प्रश्न 6. कला के प्रति लोगों का नजरिया पहले कैसा था? उसमें अब क्या बदलाव आया है?

(3) कार्यालयी पत्र/रोजगार सम्बन्धी आवेदन-पत्र

(i) कार्यालयी पत्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए उसके कई प्रकार के संबंध होते हैं। इसके साथ ही उसके अपने जीवन में भी कई प्रकार की स्थितियाँ बनती-बिगड़ती रहती हैं। कभी कोई शादी-विवाह है, तो कभी मौत, कभी जन्म-दिवस है, तो कभी उत्सव या आयोजन; इन विभिन्न अवसरों पर उसे पत्र-व्यवहार करने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त नौकरी-पेशे में, अपने अधिकारियों से अवकाश लेने, पदोन्नति के लिए प्रार्थना-पत्र देने आदि अनेक कार्यों के लिए उसे आवेदन करना पड़ता है। इसी प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में भी व्यापारियों के मध्य परस्पर पत्र-व्यवहार करना होता है। सरकारी तथा दूसरे प्रशासकीय कार्यालयों में राज्यों के विविध मंत्रालयों में जनता और शासन के मध्य अथवा सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच भी इसी प्रकार का पत्र-व्यवहार होता है। यह समस्त पत्र-व्यवहार दो प्रकार से होता है—अनौपचारिक और औपचारिक रूप में। औपचारिक रूप के अन्तर्गत होने वाले पत्र-व्यवहार में कार्यालयी-पत्र आते हैं। पाठ्यक्रमानुसार हम यहाँ कार्यालयी-पत्रों के सम्बन्ध में जानकारी करेंगे।

कार्यालयी-पत्र—जो पत्र एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में अथवा दो राज्य सरकारों के बीच, विदेशी सरकारों के बीच, सरकारी-गैर सरकारी संगठनों और संस्थाओं के बीच जन-साधारण के साथ सम्बन्ध स्थापना हेतु परस्पर प्रेषित किए जाते हैं, उन्हें कार्यालयी-पत्र कहा जाता है। कार्यालय से हमारा आशय किसी सरकारी, अर्द्ध-सरकारी या गैर-सरकारी उस स्थान विशेष से है, जहाँ से प्रशासनिक व्यवस्था संचालित की जाती है। इसलिए इन्हें शासकीय या प्रशासकीय पत्र भी कहा जाता है। कार्य के कम या अधिक होने पर इस कार्यालय का आकार छोटा या बड़ा दोनों प्रकार का हो सकता है।

कार्यालयी-पत्रों की संरचना में ध्यान देने योग्य बिन्दु—

(1) कार्यालयी या सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।

(2) ऐसे पत्रों के शीर्ष पर कार्यालय, विभाग, संस्थान या मन्त्रालय का नाम व पता लिखा जाता है।

(3) पत्र के बायीं तरफ फाइल संख्या लिखी जाती है, जिससे स्पष्ट हो सके कि पत्र किस विभाग या अधिकारी द्वारा किस विषय के तहत लिखा जा रहा है।

(4) पत्र जिसे लिखा जाता है उसका नाम, पद, पता आदि बायीं तरफ लिखा जाता है।

(5) इसके नीचे प्रेषिति (प्राप्तकर्ता) का नाम भी दिया जाता है।

(6) इसके बाद स्थान तथा दिनांक का उल्लेख और फिर उसके नीचे की पंक्ति में 'विषय' शीर्षक देकर संक्षेप में पत्र का प्रयोजन या सन्दर्भ का उल्लेख किया जाता है।

(7) प्रारम्भ में 'सेवा में' लिखा जाता है, जो कि अब धीरे-धीरे कम हो रहा है। सम्बोधन के लिए 'महोदय' ही पर्याप्त है।

(8) पिछले पत्र का (यदि कोई हो) सन्दर्भ देते हुए पत्र को प्रारम्भ किया जाता है।

(9) प्रतिपाद्य विषय को अनुच्छेदों में विभक्त कर लिखा जाता है।

(10) पत्र में आदेशाधिकारों के आदेशों का पूर्णत: समावेश किया जाता है।

(11) कार्यालयी-पत्रों में प्राय: उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष शैली का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसे अन्य पुरुष शैली में निर्वैयक्तिक ढंग से लिखना उचित रहता है।

(12) इन पत्रों की भाषा सरल, स्पष्ट, शिष्ट और संगत होनी आवश्यक है। वाक्य अधिक लम्बे नहीं होने चाहिए।

(13) पत्र के समापन पर दायीं ओर भवदीय लिखकर प्रेषक के हस्ताक्षर होते हैं।

(14) पत्र का पृष्ठांकन सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को किया जाता है।

(15) अपेक्षित और आवश्यक संलग्नक क्रम संख्या लिखना भी अपेक्षित रहता है।

(16) कार्यालयी लेखन में पत्रों पर टिप्पण या नोटिंग या आनुषंगिक टिप्पणी भी लिखी जाती है।

(17) टिप्पणी में विचाराधीन पत्र या प्रकरण को लेकर राय, मन्तव्य एवं निर्देश दिया जाता है।

कार्यालयी-पत्र

प्रश्न 1. ग्राम पंचायत, 'क ख ग' के सचिव की ओर से जिला कलेक्टर, 'अ ब स' को गर्मी के मौसम में पेयजल की समुचित व्यवस्था हेतु टैंकर भिजवाने के लिए कार्यालयी-पत्र लिखिए।

उत्तर– **सचिव, ग्राम पंचायत, 'क-ख-ग'**

पत्रांक संख्या ग्रा. प. 31/315 दिनांक 10 मई, 20XX

सेवा में,

श्रीमान् जिला कलेक्टर महोदय,
जिला अ ब स
राजस्थान।

विषय–पेयजल की समुचित व्यवस्था के क्रम में।

महोदय,

निवेदन है कि हमारा पंचायत-क्षेत्र रेगिस्तानी भूभाग है, इस कारण यहाँ पर पेयजल की समस्या सदा ही बनी रहती है। परन्तु गर्मी का मौसम आते ही यह समस्या और बढ़ जाती है। पंचायत-क्षेत्र की जनता को राहत पहुँचाने के लिए प्रतिवर्ष टैंकरों से पेयजल का वितरण किया जाता है, जिसमें आपके कार्यालय का पूरा सहयोग मिलता रहा है। इस बार भी गर्मी के मौसम को देखकर पेयजल की समुचित व्यवस्था के लिए पानी के टैंकरों की आवश्यकता है।

अत: आशा है कि इस सम्बन्ध में जलदाय विभाग को उचित आदेश देकर आप पानी के टैंकर भिजवाने की व्यवस्था करेंगे। इस समय इस समस्या को प्राथमिकता देकर यहाँ की जनता को अनुगृहीत करें।

भवदीय,
रामसहाय सैनी
सचिव
ग्राम पंचायत, 'क ख ग'

प्रश्न 2. अपनी ग्राम पंचायत के सचिव की ओर से अपने जिला कलेक्टर को गाँव में फैली मौसमी बीमारियाँ, यथा–मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया के उपचारार्थ हेतु चिकित्सकों की टीम भेजने हेतु कार्यालयी-पत्र लिखिए।

उत्तर–

पत्रांक—ग्रा. पं. 5/208/20XX दिनांक 12 जून, 20XX

प्रेषक—सचिव,
ग्राम पंचायत,
क ख ग।

प्रेषिति–श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय,
जिला क ख ग,
राजस्थान।

विषय–मौसमी बीमारियों के उपचारार्थ चिकित्सकों की टीम भेजने के क्रम में।

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति गर्मी का मौसम आते ही गाँव में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ने लगा है। इस वर्ष यह स्थिति कुछ अधिक ही दिखाई दे रही है। हमारे गाँव पंचायत क्षेत्र में एक डिस्पेंसरी है, परन्तु उसमें आवश्यक दवाइयों की नितान्त कमी है और चिकित्सक भी नियुक्त नहीं है। इसलिए मौसमी बीमारियों के प्रकोप को दूर करने तथा रोगियों के उपचार करने के लिए एक चिकित्सक की स्थायी व्यवस्था एवं चिकित्सकों की एक टीम गाँव में भेजने की व्यवस्था जरूरी है।

अत: इस सम्बन्ध में चिकित्सकों की टीम गाँव में भिजवाने हेतु आदेश प्रसारित करें।

भवदीय,
(हस्ताक्षर.....)
सचिव
ग्राम पंचायत, क ख ग

प्रश्न 3. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), पाली की ओर से सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर को राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मालनू में बोर्ड परीक्षा केन्द्र की स्वीकृति हेतु कार्यालयी पत्र लिखिए।

उत्तर–

पत्र क्रमांक 221/जि.शि.अ./15 दिनांक 11.1.20XX

प्रेषक–जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक),
बीकानेर।

प्रेषिति—सचिव
माध्य. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान,
अजमेर।

विषय–राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मालनू में बोर्ड परीक्षा केन्द्र बनाने की स्वीकृति के सम्बन्ध में।

महोदय,

पूर्व में दिनांक 2.1.20XX को प्रेषित पत्र क्रमांक 201/16 के सम्बन्ध में निवेदन है कि पाली शहर में बोर्ड परीक्षा का एक ही केन्द्र है। इससे व्यवस्था करने में काफी कठिनाई आती है। इसलिए पाली में एक अन्य परीक्षा केन्द्र राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मालनू में स्थापित किया जाए, तो सभी तरह से उचित रहेगा। उक्त विद्यालय में सब सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में हैं। इसका पूर्ण विवरण संलग्न प्रपत्र में प्रेषित है।

अत: इस सम्बन्ध में अविलम्ब कार्यवाही कर सूचित करने की कृपा करें।

भवदीय,
(हस्ताक्षर .....)
जिला शिक्षा अधिकारी,
पाली

प्रश्न 4. जिलाधीश, बाँसवाड़ा की ओर से स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान सरकार को अपने क्षेत्र में फैली अज्ञात बीमारी में राहत दिलवाने हेतु राजधानी से चिकित्सकों की एक टीम भिजवाने हेतु निर्धारित प्रारूप में एक कार्यालयी पत्र लिखिये।

उत्तर–

क्रमांक-180/33/88 सा./20XX दिनांक 10/11/20XX

प्रेषक-जिलाधीश, बाँसवाड़ा

प्रेषिति-स्वास्थ्य सचिव
स्वास्थ्य विभाग, राजस्थान सरकार,
जयपुर।

विषय–अज्ञात बीमारी से राहत दिलवाने हेतु चिकित्सकीय सहायता के संदर्भ में।

महोदय,

सविनय सूचित किया जा रहा है कि बाँसवाड़ा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में इन दिनों एक अज्ञात बीमारी फैल रही है, जिससे लोग अचानक मौत के शिकार हो रहे हैं। इस अज्ञात रोग से शरीर में कँपकँपी आती है तथा गले में सूजन आने से साँस लेना रुक जाता है और चन्द घण्टों में ही व्यक्ति की मौत हो जाती है। इस अज्ञात बीमारी से जनता बहुत ही संत्रस्त है। स्थानीय चिकित्सक इस बीमारी का निदान नहीं कर पा रहे हैं। अतएव राजधानी से विशेषज्ञ वरिष्ठ चिकित्सकों की एक टीम इन क्षेत्रों में भिजवाने की व्यवस्था यथाशीघ्र करवाने की कृपा करें।

इस सम्बन्ध में जिला स्वास्थ्य विभाग की ओर से यथासंभव सहायता उपलब्ध करायी जा सकती है। विशेषज्ञ वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम आने से जनता को इस अज्ञात बीमारी से बचाया जा सकेगा, एतदर्थ सूचित किया जा रहा है।

भवदीय,
(हस्ताक्षर.....)
जिलाधीश, बाँसवाड़ा